गद्दार कौन?

लाल पुष्प की पुस्तक के बहाने एक खोज।

लेखक - गोविन्द भागचन्दानी
मो. 9822703456

सातवीं सदी में हिन्दू राजा दाहिर सेन के बाद महान हिन्दू सिन्धी जिसने हम हिन्दूओं को जालिम मुस्लिम कौम से आजादी दिलाई

ستين صديءَ ۾ هندو راجا ڏاهر ڪانپوءِ
سڀ کان مهان هندو سنڌي
جنهن اسان هندن کي ظالم مسلم قوم کان
آزادي ڏياري

سيٺ نائونمل هوتچند پوجواڻي
(1804-1878)

ليکڪ: لعل پشپ

सेठ नाऊँमल होतचन्द भोजवानी
(1804-1878)

लेखक : लाल पुष्प
पता : 6 डनहिल, डॉ. आंबेडकर रोड
खार (वेस्ट) मुंबई - 400052

हाल ही में मुझे एक पुस्तक पढ़ने के लिए मिली है जिसे भारत के सुप्रसिध्द सिन्धी साहित्यकार लाल पुष्प ने प्रकाशित की है। यह पुस्तक मेरे जैसे किसी भी विदयार्थी के लिए बहुत ही रुचिकर तथा जिज्ञासा बढ़ाने वाली पुस्तक है। मैं कुछ उदहरण श्री लाल पुष्प की इस पुस्तक में से दे रहा हूँ ताकि पाठक वर्ग को आगे समझने में सुविधा हो।

इस पुस्तक के अंतिम पृष्ठ पर लिखा है :-

Lal Pushp Writes : He is the greatest Hindu after 7th century. He liberated us from the cruel Muslim rules by helping English men to conquer Sind. He has been called "Traitor of Sind" by the shallow Muslim and Prograssive Sindhi writers in India. They are the "Traitors of Sind".

उपरोक्त अंग्रेजी कोटेशन से यह स्पष्ट होता है कि सेठ नाउँमल होतचंद भोजवानी नामक एक व्यक्ति जो सातवी शताब्दी के बाद एक महान हिन्दु था जिसने सिंध पर विजय प्राप्त करने में अंग्रेजों की मदद की और हमें निर्दयी मुस्लिम शासन से आज़ादी दिलाई। खोखले मुसलमानों ने तथा भारत के प्रगतिशील लेखकों ने उसे सिन्ध का गद्दार कहा है। सिंध के गद्दार वे हैं।

अब प्रश्न उठता है कि सेठ नाऊँमल होतचंद भोजवानी कौन था? उसने सिंध मे कब और क्या किया था। यह जानकारी लाल पुष्प की पुस्तक में संक्षिप्त रुप में दी गई। उसे पढ़ने के बाद ही उपरोक्त विषय पर राय बनाई जा सकती है। मैं आपकी सुविधा के लिए पुस्तक में उपलब्ध जानकारी का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत कर रहा हूँ। आप सोच सकते हैं कि मैं यह सब क्यों कर रहा हूँ। आपका सोचना उचित है। मैं पहले ही लिख चुका हूँ कि मैं अपनी जिज्ञासा हेतु विषय को आगे बढ़ा रहा हूँ ताकि सिन्ध के इतिहास की जानकारी सबके सामने आए और चर्चा बढ़ती रहे। मुझे विश्वास है कि इस विश्लेषण से सिन्ध के इतिहास की अनेक दबी हुई परतें खुलकर सामने आएंगी और हमें सीखने के अवसर प्राप्त होंगे।

विषय से हटकर मैं एक बात आपके सामने रख रहा हूँ जिसमें आप सब की गहन रुचि है और होनी चाहिए। पूरा विश्व सिन्धु घाटी की भाषा और लिपी के बारे में खोज कर रहा है। रुस और अनेक देश कम्प्युटरों का इस्तेमाल कर रहे हैं ताकि सिन्धु घाटी की प्राचीनत्तम सभ्यता की जानकारी प्राप्त हो सके। सिन्धी समाज लिपी के कारण Vertically बटा हुआ है। कई विद्वानों का मत है कि सिन्धु घाटी की लिपी बाएं से दाएं लिखी गई है। इसका कारण शायदयह है कि इस लिपी की जाँच करते समय पंजाबी भाषा (गुरमुखी) को आधार बनाया गया था क्योंकि उस समय सिन्ध की प्रचलित लिपी अरबी लिपी दाएं से बाएं लिखी जाती है। सुनीत कुमार चटर्जी तथा राम विलास शर्मा आदि विशेषज्ञों की पुस्तकों में इस विषय पर चर्चा उपलब्ध है। आपकी और मेरी

रुचि इतनी अवश्य है कि सत्य की खोज हो जाए। शायद उस समय सिन्धी समाज का कोई विशेषज्ञ भाषा विज्ञान में हस्तक्षेप नहीं रखता था लेकिन आज सिन्धी समाज ने कई भाषा विज्ञानी पैदा किए हैं जो अपने कार्य में लगे हुए हैं। मैं कुछ नाम गिनाना चाहूंगा। श्री खूबचंदानी, श्री परसो गिदवानी तथा सतीष रोहड़ा तथा श्री निहलानी। इनके अलावा भी कई विद्वान भाषा विज्ञानी एवं साहित्यकार हैं जो इतिहास में रुचि रखते हैं। वे मेरी जिज्ञासा को समझ सकते हैं क्योंकि मैं भारत में जन्म लेने वाला शख्स हूँ जो अपनी भाषा, साहित्य तथा संस्कृति की जानकारी हासिल करना चाहता हूँ। मुझे विश्वास है कि मेरी तरह सैकड़ोंयुवक हैं जो अपनी मातृभूमि से उखड़ कर हिन्दुस्तान में बिखर गए है और अपनी संस्कृति तथा इतिहास को जानना चाहते हैं। मैं इस विषय को अनुवाद करने मेरी अपनी पीढ़ी के समुख रखना चाहता हूँ जो सिन्धी भाषा नहीं पढ़ पाए विशेषकर अरबी सिन्धी लिपि में। में पढ़ने की अपनी विशेष रुचि के कारण सिन्धी लिपि पढ़ पाता हूँ और चाहता हूँ कि मेरे अन्य समकालीन साथी भी इस विषय को पढ़े और चर्चा करें।

लाल पुष्प की उपरोक्त पुस्तक में सेठ नाऊँमल होतचंद भोजवानी का समयकाल 1804 से 1878 दिया गया है। इस पुस्तक की प्रस्तावना में दिया गया है उसका अनुवाद इस तरह है।

"यह पुस्तक एक खास इरादे से लिखी गई है। बदनसीबी है कि हम सिन्धी हिन्दू अथवा मुसलमान अधिकतर नाऊँमल नाम से भी वाकिफ नहीं हैं, इस कदर कि लेखकों में भी सिर्फ एक हाथ की उंगलियों जितने लोगों ने नाऊँमल की यादगार को पढ़ा है।"

"दरअसल सेठ नाऊँमल ने अपनी यादगार को अपने हाथ से लिखा था सिन्धी भाषा में, किन्तु यह पुस्तक सिन्धी अरबी बोर्ड ने पहली बार इसे सिन्धी में पुस्तक छपने के पूर्व अंग्रेजी में यह पुस्तक 1915 में प्रकाशित हुई थी जिसका अनुवाद सेठ नाऊँमल के पौत्र राय बहादुर आलुमल टीकमदास भोजवानी ने किया था।"

"दस वर्ष से मैं अंग्रेजो अनुवाद हासिल करने की कोशिश कर रहा हूँ। सिन्ध अथवा हिन्द में मुझे नाकामयाबी मिली हैं, साथ साथ सिन्धी एडीशन छपने की भी कोशिश की है, मुझे नाकामयाबी मिली है क्योंकि डेमीसाईज में यह पुस्तक 275 पृष्ठ है जिसे अच्छीतरह प्रकाशित करने के लिए कम से कम एक लाख रुपयों की आवश्यकता है।"

"लन्द नवासी मेरे एक परिचित ने मुझे बताया कि लन्दन की एक शाही लायब्रेरी में उसने अंग्रेजी की प्रति देखी है, जिस पर मैंने उसे फोन द्वारा कहा कि किसी भी तरह वह मुझे उसकी झेरॉक्स कॉपी भेज दे लेकिन मैं उम्मीद छोड़ बैठा जब उसने फोन से ही बताया कि वह कॉपी लायब्रेरी से चोरी हो गई है।"

"सिन्धी अरबी बोर्ड ने सन 1978 के बाद फिर तीसरी एडीशन छपाई नही प्रश्न उठता है क्यों? प्रश्न उठता है कि अंग्रेजी की कॉपी लंदन की लायब्रेरी से कैसे चोरी हो गई? इस पर अनेक शंकाएं उत्पन्न हो रही हैं। इन शंकाओं को मैंने इस पुस्तक में पूरी दलीलों के साथ जाहिर किया है।"

...2...

"मेरा उद्देश्य है कि यह पुस्तक तथा सेठ नाऊँमल की यादगार को यहां हिन्दुस्तान में अधिक से अधिक सिन्धी पढ़े और पढ़ने के बाद मुझे विश्वास है कि मेरी निम्नलिखित राय से सहमत होंगे।

सिन्धी, हिन्दू जाति में सातवीं सदी अर्थात राजा दाहिर सेन के बाद फिर दूसरा बड़े से बड़ा सिन्धी सेठ नाऊँमल होतचंद भोजवानी (1805-1878) अर्थात ग्यारवीं सदी के इतने लम्बे समय के बाद पैदा नहीं हुआ। बीच के समय में अनेक बड़े नामी लोगों ने, अनेक क्षेत्रों में से किसी भी क्षेत्र में किसी ने भी सेठ नाऊँमल का नाम तक नहीं लिखा जिसमें मेरुमल होतचंद (मेहरचंद), साधू टीएल वासवानी, लालचंद अमर दिनोमल, जेठमल परसराम, मिर्जा कलीचबेग, एम यू मल्कानी, तीर्थ बसन्त शेख अयाज आते हैं।

बीते हुए सौ वर्षों में, विभाजन के अब पैंसठ /पचास वर्षों के बाद भी सभी लोगों ने अपना मुंह बंद क्यों रखा है?

नाम लेने की बात दूर रही, नाऊँमल को मेरे तरक्की पसन्द दुश्मनों ने जिसमें गोबिन्द माल्ही, उत्तम, कीरत बाबाणी ने सिंध का गद्दार कहा है मात्र सिन्ध के मुसलमानों को खुश रखने के लिए। मैंने पहले भी लिखा है कि काश नाऊँमल के पिता के समान इनका भी तहर सिन्धी मुसलमानों के हाथो से किया जाता तो ये समझ पाते कि गद्दार कौन था।

लाल पुष्प

अगस्त 2002

इसके पश्चात श्री लाल पुष्प ने पुस्तक का निचोड़ (सार) इस प्रकार लिखा है -

1) सातवी सदी के पहले सिन्ध में केवल सिन्धी हिन्दू रहते थें और सिन्ध पर हुक्म चलाते थे।

2) उस समय सिन्ध का बहादुर राजा दाहिर शासन करता था।

3) इसी सदी में दुनिया के हर छोर में मुसलमानों ने धर्म के नाम पर हमले किए, इस्लाम को प्रसारित करने के लिए और वे जबरदस्त कामयाब हुए।

इन्होने सिन्ध पर भी हमले किए लेकिन हर बार राजा दाहिर से शिकस्त खाई। अंत में राजा दाहिर के हिन्दू दुश्मन की मदद से वे अपने नापाक इरादों में सफल हुए। इन्होने सिन्ध में आम कत्ल किया और सिन्ध में पहली बार हम हिन्दुओं से मुसलमान बनाए गए।

6) उसके बाद लगातार सदियों तक अलग अलग मुस्लिम शासन हम हिन्दुओं पर तरह तरह के जुल्म करते रहे।

7) मुसलमान अपनी आबादी बढ़ाते गए और हम हिन्दुओं की आबादी घटाते गए।

8) इन सब सदियों में हम हिन्दु सिन्धी, सिन्ध में दूसरे दर्जे के नागरिक गिने गए।

9) अक्ल के गधो ने घोड़ों पर बैठ कर हमें गधों पर सवारी करने के लिए मजबूर किया गया।

10) इन सब सदियों में सिन्ध में कोई भी कायदा कानून नहीं था।

11) मुसलमान हाकिम जनता की ओर अन्धे थे और अपनी ऐशो-अशरत में डूबे थे।

12) इन सब सदियों में अगर कोई सिन्धी हिन्दू अपने गुणों से व्यापार आदि में प्रसिध्दी प्राप्त करता था तो उस पर छीटाकशी (अकूबतूं) की जाती थी।

13) सेठ नाऊँमल होतचंद भोजवानी (1805-1878) अपने व्यापार में दुनिया भर में नाम कमाया तो वह मुसलमानों की निगाहों में कांटा बन गया। परिणाम यह हुआ कि इसके पिता होतचंद को भगाकर मुसलमान बनाने की कोशिश की गई।

14) तब जाकर सेठ नाऊँमल की आंखे खुली जो सिन्ध का पूरा इतिहास पढ़ने के पश्चात, पहले ही खुल गई थी।

15) इस समय तक अंग्रेजों ने पूरे हिन्दुस्तान को अपने अधीन कर लिया था और मुसलमानों के शासन को नेस्त नाबूत कर दिया था। सिन्ध की ओर उनका ध्यान इसलिए नहीं गया था क्योंकि वे सिन्ध को एक बीहड़ और पिछड़ा हुआ रेगिस्तान, टेकड़ी मान कर बैठे थे। लेकिन सेठ नाऊँमल ने उनका ध्यान सिन्ध की ओर आकर्षित करके सिन्ध पर विजय प्राप्त करने के लिए आमंत्रित किया ताकि सिन्धी हिन्दुओं को ज़ालिमों के पंजो से मुक्त कराएं।

16) और इस तरह सेठ नाऊँमल की हर तरह की सहायता से अंग्रेजों ने सिन्ध पर जीत हासिल की। विभाजन के बाद सिन्ध में नाऊँमल को बद्दार कहा गया।

यह रहा श्री लाल पुष्प द्वारा पेश किया गया पुस्तक सार। सेठ नाऊँमल होतचंद की पुस्तक जिसे श्री लाल पुष्प ने पढ़ा है और आधार बनाकर तथा यूं कहें कि अनेक सचाईयों को संभवत: परखने के बाद अपने विचार प्रकट किए हैं। हम इन्हें सत्य मान लेते हैं क्योंकि यह सब करने के पीछे श्री लाल पुष्प का कोई व्यक्तिगत स्वार्थ प्रतीत नहीं होता। तथ्यों को पढ़ने समझने और विश्लेषण करने में कुछ त्रुटियां हो सकती हैं लेकिन उसका झुकाव (Tilt) इतना अधिक नहीं होगा जितना तीव्र Reaction श्री लाल पुष्प का दिखाई देता है। खैर जो भी हो, एक बात समझ में नहीं आती कि सिन्ध के प्रगतिशील लेखकों से विवेचन करने में गलती किस तरह हो गई है। मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूं उनकी राय से मैं बिल्कुल अनभिज्ञ हूं। मैंने उनका पक्ष न सुना है न पढ़ा है। मुझे आश्चर्य हो रहा है कि प्रगतिशील लेखक जिनका दृष्टिकोण अधिक तर्क संगत और ठोस सबूतों पर आधारित होता है कैसे उन्होने सेठ नाऊँमल को गद्दार कहा जा सकता है जिसने विदेशी ताकतों की सहायता लेकर भारत को अंग्रेजों से मुक्त कराना चाहा।

जिन प्रगतिशील लेखकों के नाम दर्शाए गए है जैसे कि श्री गोविन्द माली, कीरत बाबाणी मैं उनके सामने एक विद्यार्थी मात्र हूं। मेरी कामना है कि मुझे उनका पक्ष पढ़ने और सुनने को मिले तो मेरा सौभाग्य होगा। मैं गोविन्द माल्ही जैसी शख्सियत के सामने नतमस्तक होना चाहूंगा जिन्होने भारत से सिन्धी कल्चर को जिन्दा

रखा। आज भी आवश्यकता है उस प्रयास को आगे बढ़ाया जाए।

मैं आदरणीय लाल पुष्प (शायद स्वर्गवासी हैं) से भी एक निवेदन करता हूं कि मतभेद रखने वाले को दुश्मन कहना शायद अच्छा नहीं है। सत्य की खोज दोनो पक्षो को है अत: दुश्मनी कैसी?

यह लेख लिखने के पश्चात में चाहता हूं कि कुछ मूल विषयों पर चर्चा होनी चाहिए जो इस प्रकार है। आज हमारे सामने इस बात का महत्व नहीं कि गद्दार कौन है।

उस समय की हमलावर मुस्लिम कौम जिसने अपने शासन के हित में अत्याचार किए, शोषण भी किया होगा, क्या आज भी सिन्ध में मौजुद है? श्री लालपुष्प के अनुसार भी हम देखें तो आज सिन्ध में जो मुस्लिम हैं वे संभवत: आम कत्ल के समय और बाद के समय में धर्मांतरित हिन्दू लोग हैं। यही बात पूरे भारत में दिखाई देती हैं। अनेक मुसलमान भारत में मौजूद हैं जो मूलत: हिन्दू हैं देवतले, भालेराव आदि ऐसे अनेक नाम है मिसाल के तौर पर सिन्ध के इतिहास की समीक्षा अगर हम करते भी हैं तो उद्देश्य आपसी सौहाद्र में किसी प्रकार की कमी न आए ऐसी सावधानी बरतना आवश्यक है। समीक्षा का Target शासक वर्ग और उसका स्वार्थ होना चाहिए क्योंकि वह जुल्म और शोषण धर्म के आधार पर नहीं करता। शासक वर्ग धर्म के आधार पर लोगों में फूट डालने का काम करता है। हिन्दुस्तान में अंग्रेजों ने यही किया। सही धार्मिक लोग प्रेम बढ़ाते हैं। सिन्ध में सूफी मत हो या हिन्दुस्तान का सनातन पंथ इनका संगम इस तरह हो गया है जैसे दो नदियों का शुध्द जल जिसे अलग करना असंभव है।

सिंध के अनेक पहलू हैं जिन पर खोज होनी बाकी है। लाल पुष्प ने इतिहास का एक पहलू लिया है। इस विषय में तात्कालीन मुस्लिम शासन और समाज (पहले हिन्दू और बाद में हिन्दू और मुस्लिम दोनो ही) आ जाते है। सिन्ध में अलग अलग शासन काल में लोगों का जन जीवन, आपसी संबंध उत्पादन के साधन इन साधनों पर आश्रित विकसित लोगों के संबंध, समकालीन न्याय प्रणाली, शिक्षा प्रणाली, साहित्य यह तभी संभव है जब भारत और पाकिस्तान के शासन और वहां के लोगों के बीच शांति स्थापित हो, आदान-प्रदान हो क्या यह संभव है? और किस तरह संभव हो सकता है?

सिन्धु घाटीकी सभ्यता जिसके साथ हमारा पूरा अतीत जुड़ाहुआ है, उसके तमाम पहलुओं पर सम्पुर्ण खोज होनी चाहिए चाहे वह भारत सरकार अथवा पाकिस्तान सरकार करे हमें कोई फर्क नहीं पड़ता।

अंत में हमें अपनी भाषा, साहित्य, संस्कृति का लोगों में अधिक से अधिक प्रचार किस तरह करें यह गंभीर विषय है। सिन्धी भाषा साहित्य की विशेषताओं के बारे में हम अगर लोगों को बताएं वह किसी भी भाषा में क्यों न हो तो फिर सिन्धी भाषा की लिपी की समस्या एक गौण समस्या बन जाती है। फिलहाल सिन्धी भाषा को बोलचाल में बढ़ावा मिलता रहे यही काफी है। सिन्धी भाषा में हमारा स्वाभिमान है, हमारा गर्व है यह सत्य हमें लोगों को बताना है। समय के साथ यह सिध्द हो जाएगा। सिन्धी भाषा, सिन्धू देश के प्रति हमारा लगावा भारत पाकिस्तान तो क्या पचास से अधिक देशों में बसे सिन्धी लोगों में दिखाई देता है, यह कोई छोटी बात नहीं

है। सिन्धू सभ्यता ने धर्म को तुच्छ साबित कर दिया है। पढ़िए शह, सचल और सामी।

इस अन्तहीन विषय को यही समाप्त करता हूं लेकिन आप जान लीजिए कि सिन्धी लोगों में आज भी सिन्ध से, सिन्धी भाषा, साहित्य, संस्कृति से उतना ही लगाव है और वह कभी कम नहीं होगा। इस बात का सबुत यह है कि 'स' का उच्चारण 'ह' सिन्धियों ने ही बदला। 'सिन्ध' का 'हिन्द' औरों ने बनाया सिन्धियों ने नहीं। आज भी हमारी भाषा सिन्धी कहलाती है। सिन्ध प्रांत का नाम सिंध ही है। इस बात को जोर देकर भारत के एक भाषा विज्ञानी ने सिन्धी समुदाय का अपनी भाषा संस्कृति के प्रति लगाव बताया है। क्या यह सत्य नहीं कि भारत में सिन्धी समाज की 10 प्रतिशत संस्थाओं में "सिन्धु" शब्द आता है, क्यों?

आप पाकिस्तान सरकार द्वारा हाल ही में शुरु किया गया KTN चैनल देखिए आज भी वहां के कलाकार गा रहे है मास्टर चन्दर का वह गीत - रुठाई रहनि पर हुजेनि हयाती। ऐसे अनेक उदाहरण हैं। आबिदा परवीन संत कंनराम के गीत गाकर कैसेट बनवा रही है तो भारत में सुधा भागचंदानी आबिदा परवीन के गाए हुए गीतों पर नृत्य कर रही है।

अंत में सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूँ कि निराशा राजनैतिक स्तर पर है न कि कलाकारों और साहित्यकारों और साहित्यकारों के बीच में। विश्लेषण भले ही होता रहे कि गद्दार कौन? लेकिन प्रश्न बहुत ही तुच्छ है। मैं एक बात कहना चाहुंगा कि भाषा के आधार पर राज्यों का गठ नशायद उचित नहीं है। इस विषय पर एक पूरा लेख लिखने वाला हूँ।